عام مسلمان کے اندر اس سے گھبراہٹ نہ پیدا ہو سکے۔

श्री जगदीश प्रसाद माथुर (उत्तर प्रदेश) : मैं अफजल साहब की बात की ताईद करता हूं कि जो कुछ यह बेहूदा चीजें छापी गई हैं, इसको सरकार को देखना चाहिए और आर०एस०एस० का जहां तक सवाल है, वह इसका जवाब कैसे दे, क्योंकि वह बैन्ड आर्गेनाइजेशन है और दे भी नहीं सकते। लेकिन मैं यकीनन यह कह सकता हूं कि इस प्रकार की बेहूदा चीजें हरगिज़ भी आर०एस०एस० नहीं छापेगा और खास तौर पर जिस प्रकार की सख्त उर्दू लिखी है, तो आर०एस०एस० वालों की तो वह नुत्फा-वुत्फा समझ में नहीं आएगा।

THE VICE-CHAIRMAN (SYED SIBTEY RAZI): Now, please sit down. We are running short of time. The Prime Minister has to reply to the Motion of Thanks.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : यह उर्दू का मसला नहीं है। यह अंग्रेजी का परचा है जिसको उर्दू में बांटा गया है। मैं इसे भी गलत कह रहा हूं।

उपसभाध्यक्ष (श्री सैयद सिब्तेर जी) : माथुर साहब, अभी आपने कह दी, बात समाप्त हो गई।

श्री जबदीश प्रसाद माथुर : यह बात बहुत जरूरी है कि इसकी तहकीकात की जाए और मुजरिम को सजा दी जाए।

Need for early approval of the Mero Rail Project to Delhi

SHRI KRISHNA KUMAR BIRLA (Rajasthan): Mr. Vice-Chairman, Sir, my Special Mention is about the urgent need to have a metro in Delhi.

The metro rail project mooted some years back to solve the ever-growing transport problem in Delhi has, seemingly, not featured in Government's priority list and has been inordinately delayed desrate the feability and 34 techno-economic reports. The implementation cost of the first phase of the project, covering 67.5 kms., estimated at Rs. 2,555 crores at the 1989 prices level has risen to Rs. 3,400 crores. The implementation cost of the complete mass rapid transport system, estimated around Rs. 5,377 crores in 1989, has enormously risen to Rs. 10,000 crores. With the ever-increasing Delhi population, the transportation scenario is growing from bad to worse and the 95 lakh Delhites are suffering for want of a rapid transport system, besides being choked under the weight of population and related problems.

It would not be impertinent to point out that in 1988-89, 42 lakh trips were made by 6,000 buses and 14 lakh personalised vehicles were on the road. It is estimated that in 2,001, with the metro rapid transport system, 114 lakh trips would be made for which 16,000 buses would be required, resulting in the reduction of the average journey speed.

Therefore, to solve the transportation problem in Delhi, it is of utmost important that the project is taken up for implementation in right earnest.

The reasons for years' delay in taking a decision on the project are unkown. But it is unfortunate that this vital project of phblic importance is now reported to have been shelved presumably because of the financial constraint due to the rise in the cost of its implementation. Needless to say, the fate of the project is the culmination of the Government's indecision for years together.

When fly-over are being sonstructed in various parts of the city to ease the problem of road traffic, it is equally imperative to provide a mass rapid transport system to solve the fast-growing transport problem of the metropolis with its ever-increasing population. The Government should, therefore, reconsider its decision in regard to the implementation of this metro rail poject, in the larger public interrest. The Government should, therefore, reconsider its decision in the larger public interest for implementation of the metro rail project.

SHRI M. A. BABY (Kerala): This is a very important issue. (*Interruptions*). Madam, you may respond after I have associated myself with this. I am happy that the Minister is here to instantaneously respond. A very important issue has been raised by hon. Birlaji. I do not want to elaborate this due to paucity of time. I only want to asociate myself with this. I hope the Government will give utmost importance to constructing the metro railway project. Otherwise, air pollution in the city of Delhi is becoming unberable. I hope the Government will implement such an important project.

THE MINISTER OF URBAN DEVELOPMENT (SHRIMATI SHEILA KAUL): Sir, it has been mentioned just now that the metro rail project is being shelved. I am happy to inform you that there is no such thing as this. We are vigorously trying to implement it. We have had a number of meetings. I think in the next week also we are having a meeting. Having realised that it is very important that we have a metro working in the city of Delhi we are vigorously pursuing the whole project.

MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS—Contd

श्री शिव प्रताप मिश्र (उत्तर प्रदेश) : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हू क्योंकि आपने मुझे महामहिम राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर अपना मत व्यक्त करने के लिए अवसर दिया है। पहले जब मैंने महामहिम राष्ट्रपति जी का अभिभाषण पढ़ा तो उसमें नववर्ष के शुभारभ के पहले, जब दिसंबर महीना उसके स्वागत की तैयारियां कर रहा था और उसमें इस राष्ट्र के साथ ऐसी उम्मीद बनाए हुए था कि जिसमें प्रभु राम के महावाक्य को चरितार्थ किया जा सके। उनका महा वाक्य था :

"परहित सरिस धर्म नहीं भाई,
परपीड़ा सम नहिं अधमोई।"

सब से बड़ा धर्म वह है जिसमें सभी लोगों का उपकार हो सके, लेकिन किसी को पीड़ा देने से बड़ा अधर्म नहीं है। लेकिन वहां एक धयंकर उत्कापात हुआ। उस उल्कापात से बहुत दिन का खड़ा हुआ एक बाबरी-मस्जिद का ढाचा ढह गया। उसकी ईंटें उखड़ गईं। मैं नहीं कहता हू कि उसको किन लोगों ने किया, लेकिन मैं यह जानन चाहता हूं और बताना चाहता हूं उन लोगों से और उन लोगों को कि क्या यह धर्म का कृत्य था ? धर्म तो इसी सदन में 1988 में मैं सांसद् था, तब यहां पर एक विधेयक आया था कि धार्मिक-स्थलों को किसी अधार्मिक या राजनीतिक प्रक्रिया के लिए प्रयोग करना मना है, लेकिन वहां पर धर्म के नाम पर जो यह कृत्य हुआ, मैं धर्म की परिभाषा में उसे नहीं मानता। इससे राष्ट्रपति जी का अभिभाषण शुरू हुआ। धर्म की व्याख्या जो हिन्दुत्व को आज कहा जाता है हिंदुत्व जो सनातन धर्म का पर्यायवाची है और वैदिक धर्म का पर्यावाची है' क्यों हिन्दुत्व जो है यह अग्रेजी वेबस्टर्ज डिक्शनरी में, शब्दकोश में और भी जगहों पर मैंने इसको देखा कि जो लोग रह रहे हैं सिधु नदी के किनारे वह सब पहले इंदूज कहे जाते थे अर्थात् वह हिन्दू हुए। तो इसमें कोई हिन्दू, मुसलमान, सिख, पारसी सभी सिंध नदी के किनारे जितने भी लोग रह रहे थे सभी हिन्दू कहे जायेंगे। मुसलमान का जो 14वीं शताब्दी उसकी चल रही है उसका मतलब है समूचा ईमान जो कुरान में रखे या इस्लाम में रखे और कुरान और इस्लाम जो हम लोगों को एक शिक्षा देती है कि ईश्वर एक है, वह हमारे वैदिक धर्म, वह वेदांत के धर्म, वह हमारे पोराणिक धर्म और उसी को आज हिन्दुतत्व कहा जाता है, उससे मैं अलग नहीं मानता हूं। क्योंकि जब पैगम्बर मोहम्मद को आवाज आई गारे हेरा की गुफा में, तो वह एक ही आवाज थी और वह किसी मक्का की मस्जिद में नहीं आई थी कि, "कुलहू कल्लाहो अहद"। मोहम्मद कहदो कि अल्लाह एक है और यही वेदों में भी कहा है कि "महत देवानाम् अल मकम" अर्थात देवता एक है, लेकिन उसका विद्वान लोग कई नामों से वर्णन करते हैं। हमारे उपनिषदों में कहा हैं कि;

"यानउमानि भूतानि जायन्ते,
यानि जातानि जीवंति यत्यप्रत्यभंश
विशन्ति तत सत्य तत ब्रम्ह तत ईश्वर"